SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

तबला के घराने तथा उनकी विशेषताएं

MOHIT KUMAR

Teaching Assistant (Tabla), Institute of Music and Fine Arts, University of Jammu, Jammu

सार

घराना शब्द के विषय को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि जब भी कोई कला विकसित होती है और इतनी सुसंस्कृत और समृद्ध हो जाती है कि बदलते समाज में वह कला विशेष पहचान और प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेती है तो वह कलाकार के इतिहास और उनकी कला का हिस्सा बन जाती है। यह एक परंपरा बन जाती है, जिसमें पीढ़ी दर पीढ़ी कला की प्रायोगिक प्रगति के आधार पर विभिन्न शैलियों का निर्माण और विकास होने लगता है। इस दृष्टि से भारतीय संगीत में गायन, वादन और नृत्य की परंपराएँ अलग-अलग समय में अलग-अलग रूपों में विकसित होकर समय के साथ-साथ ये परंपराएँ संगीत के विभिन्न घरानों में विकसित हुई हैं।

मुख्य शब्द: *तबला, घराना, दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस, पंजाब*

तबला वादन में घराना

संगीत की दुनिया में घराना शब्द की उत्पत्ति घर के अर्थ से हुई है। घर शब्द संस्कृत के ग्रह शब्द से बना है जिसका अर्थ है वंश, परंपरा, परिवार, जनजाति, वर्ग, संप्रदाय, परिवार आदि। तबला वादन में दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस और पंजाब तबला वादकों के छह प्रमुख घराने माने जाते हैं। इन सभी घराने में दिल्ली घराना सबसे पुराना घराना माना जाता है। दिल्ली घराना के दो शिष्यों ने आगे चलकर अजराड़ा घराने की स्थापना की। दिल्ली घराना के शिष्य देश के विभिन्न शहरों में फैल गए और स्थायी रूप से बस गए और उन्होंने परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुसार अपना वादन बदला और अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा और रचनात्मक शक्ति के आधार पर अपनी अलग पहचान बनाई। नई शैली को उनके वंशजों और शिष्यों ने पीढ़ियों तक अपनाया। इसी प्रकार फर्रुखाबाद घराने की उत्पत्ति लखनऊ घराने के प्रसिद्ध तबला वादक बख्शू खां के दामाद हाजी विलायत अली खां से मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि बनारस घराने की उत्पत्ति लखनऊ के एक अन्य तबला वादक मोदू खान के शिष्य पंडित रामसहाय मिश्र से हुई थी। पंजाब घराने के संदर्भ में कहा जा सकता है कि यह स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ और पंजाब के प्रसिद्ध पखावजी और तबला वादक भवानी दास ने इस घराने की स्थापना की।

दिल्ली घराना

उस्ताद सिद्धार खां ढाडी को दिल्ली घराने का संस्थापक माना जाता है। उस्ताद सिद्धार खां के पुत्र और अनुज उस्ताद चांद खां के छोटे भाई बुगरा खां उनके मुख्य पारंपरिक शिष्य थे। दिल्ली घराना उनके वंशजों और शिष्यों की परंपरा से फैला। उस्ताद बुगरा खाँ के दो बेटे थे (1) सिताब खां (2) गुलाब खां। उस्ताद सिताब खान के बड़े भाई, उस्ताद सिताब खान के बेटे बड़े काले खां और शिष्य कल्लू खां और मिरू खां सभी प्रतिभाशाली कलाकार थे। तबले के इतिहास में उस्ताद मुनीर खां के शिष्यों में उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद अमीर हुसैन खाँ आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उस्ताद बुगरा खां के दूसरे बेटे उस्ताद गुलाब खां की परंपरा में उनके बेटे मुहम्मद खां और पोते काले खां ने भी तबला जगत में प्रसिद्धि हासिल की। इस परंपरा में उस्ताद लतीफ अहमद खां, उस्ताद फैयाज खां और उस्ताद राम धुर्वे आदि का नाम लिया जाता है। काले खां के दो बेटे थे, उस्ताद गामे खां और उमुन्नु खां।

उस्ताद सिद्धार खां के तीसरे बेटे जिनका नाम अज्ञात है। उनका वंश दिल्ली घराना में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उनके दो बेटे थे, उस्ताद मोदू खां और उस्ताद बक्शू खां, जिन्होंने लखनऊ घराना की स्थापना की। उस्ताद सिद्धार खां की परंपरा में उनके छोटे भाई उस्ताद चांद खां, उनके बेटे लल्ली मसीत खां, पोते हुसैन खान और परपोते नन्ने खां और घसीट खां विशेष रूप से प्रमुख कलाकार थे। उनकी परंपरा में उस्ताद जुगना खां, उस्ताद अज़ीम खां, उस्ताद ज्ञान प्रकाश घोष, उस्ताद फैयाज़ खां और उस्ताद हिदायत खां आदि प्रमुख हैं। उस्ताद सिद्धार खां की शिष्य परंपरा में तीन प्रमुख शिष्य सर्वश्री रोशन खां, तुल्लन खां और कल्लू खां का नाम आता है।

दिल्ली घराने का कायदा :

धाति टधा तिट धाधा तिट धागे तिना किना

X 2

ताति टता तिट धाधा तिट धागे धिंना गिना

0 3

दिल्ली घराना की विशेषताएं:

- दिल्ली घराना मुख्य रूप से चांटी और किन्नर का बाज है। इसे दो अँगलियों वाला बाज भी कहा जाता है।
- इसमें अधिकतर तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों का प्रयोग होता है।
- इस घराने में पेशकार, कायदा, रेला, टुकड़े आदि विशेष रूप से शामिल हैं।
- इस घराने में तिट, तिरकिट, धातीधागे, धिनागिना बोल विशेष रूप से प्रयागे होते हैं।

अजराड़ा घराना

अजराड़ा घराने का जन्म और विकास उस्ताद सिद्धार खां के पोते सिताब खां के शिष्य उस्ताद कल्लू खां और मीरू खां ने किया था। उनके वंशजों में मुहम्मद बख्श, चांद खां, काले खां, कुतुब खां, तुल्लन खान और घीसा खां शामिल थे। कुतुब बख्श का पुत्र हस्सु खां एक प्रसिद्ध माने हुए उस्ताद थे। उनके पुत्रों, वंशजों और शिष्यों में बंबू खां, शंभू खां और नन्ने खां थे। इस परंपरा में अजीजुद्दीन खां, नियाजु खां और घीसा खां की परंपरा में जिम्मू खां और उनके शिष्यों निजामुद्दीन खां, जमीर अहमद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जो एक उच्च श्रेणी के तबला वादक हैं। उस्ताद शंभू खां के पुत्र उस्ताद हबीबुद्दीन खां जी की परंपरा में उनके पुत्र मंजू खान और शिष्य सुधीर कुमार सक्सेना शामिल हैं। नन्ने खां कुड़ीवाले की परंपरा में हशमत अली खां विशेष उल्लेख के पात्र हैं। इस परिवार की परंपरा को आज भी जीवित रखने में उस्ताद रमजान आशिक हुसैन अली खान आदि का विशेष योगदान है।

अजराड़ा घराने का कायदा

धा तिरकिट धागेना धागे धिना गिना धा तिरकिट धागेना धागे धिना गिना धागे तिरकिट धिना गिना

धा तिरकिट धागेना धागे धिना गिना धागे तिरकिट धिना गिना धा तिरकिट धागेना धागे तिना किना

ता तिरकिट ताकेना ताके तिना किना ता तिरकिट ताकेना ताके तिना किना ताके तिरकिट तिना किना

धा तिरकिट धागेना धागे धिना गिना धागे तिरकिट धिना गिना धा तिरकिट धागेना धागे धिना गिना

अजराड़ा घराना की विशेषताएं

- इस घराने में मध्यमा और तर्जनी उंगलियों के साथ अनामिका उंगली का भी प्रयोग किया जाता है।
- इस घराने में तिस्र जाति के कायदे अधिकतर सुनने को मिलते हैं।
- इस घराने में डग्गे का प्रयोग मींड युक्त किया जाता है, जिससे गीत के बोलों के साथ एक सुंदर संयोजन बनता है।
- इस घराने में जटिल लयकारी को सहजता से प्रस्तुत किया जाता है।

लखनऊ घराना

तबला वादन की कला लम्बे समय तक दिल्ली में फली-फूली। धीरे-धीरे इसका प्रचार दिल्ली से पूर्व की ओर फैलने लगा। इस प्रकार दिल्ली का तबला लखनऊ आ गया। वहां यह ख्याल और ठुमरी की संगत के लिए उपयुक्त साबित हुआ। दिल्ली के उस्ताद मोदू खां और बक्शू खां नवाब आसफदौला के समय में लखनऊ आए थे। तबले को लखनऊ के संगीतमय वातावरण के अनुरूप विकसित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार लखनऊ घराने की नींव इन कलाकारों द्वारा रखी गयी। उस्ताद मोदू खां के बेटे जहीर खां एक अच्छे कलाकार थे। उनके शिष्यों में पंडित रामसहाय मिश्र जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

उस्ताद बख्शू खां के बेटे मम्मन उर्फ मम्मू खां, सलारी खां और केसरी खान थे। उनके दामाद और शिष्य हाजी विलायत अली थे। वह अपने समय के महानतम तबला वादक थे। उस्ताद मम्मू खां को लखनऊ राजवंश का खलीफा माना जाता रहा है। उनके पुत्र का नाम मुहम्मद खां था। उनके दो बेटे थे - मुन्ने खां और आबिद हुसैन खां। उस्ताद आबिद हुसैन खां के दामाद और भतीजे उस्ताद वाजिद हुसैन खां भी एक महान कलाकार बने। वर्तमान में आफाक हुसैन के बेटे इल्मास हुसैन इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। वीरू मिश्र और जहांगीर खां जैसे प्रसिद्ध कलाकार उस्ताद आबिद हुसैन खां के शिष्य थे। जिससे इस परिवार का वंशवृक्ष विकसित हुआ।

लखनऊ घराना (कायदा)

धिटधागे नाधातिट धिटधागे धीनागिना | धिटधिट धागेनाधा तिटधागे तिनाकिना |

X 2

तिटताके नातातिट तिटताके तिनाकिना | धिटधिट धागेनाधा तिटधागे धिनागिना |

0 3

लखनऊ घराना की विशेषताएं

- पखावज और नृत्य के प्रभाव से दिल्ली का बंद तबला लखनऊ में खुला और मजबूत हुआ।
- यहां चांटी की अपेक्षा स्याही का प्रयोग तथा लव से ध्वनि निकाली जाती है।
- इस घराने में लग्गी-लड़ी का काम विशेष रूप से देखा जा सकता है।
- इस घराने में नृत्य के बोलों को भी सुना जा सकता हैं।

फर्रुखाबाद घराना

लखनऊ घराने के संस्थापकों में से एक उस्ताद बख्शू खां ने फर्रुखाबाद के एक प्रतिभाशाली युवक विलायत अली को उत्कृष्ट तबला शिक्षा दी थी। उन्होंने अपनी बेटी का विवाह विलायत अली से किया। ऐसा कहा जाता है कि उन्हें दहेज के रूप में लगभग 600 गतें और गत परन दिए थे। उस्ताद हाजी विलायत अली ने अपने समय में अनेक उच्च कोटि के शिष्य तैयार किये और फर्रुखाबाद घराने की नींव रखी। उस्ताद हाजी विलायत अली के बड़े बेटे उस्ताद निसार अली खां तबला और पखावज के विद्वान थे। वह कई वर्षों तक रामपुर के दरबारी कलाकार रहे। उनके शिष्यों में प्रमुख उनके छोटे भाई हुसैन अली खां हैं। उस्ताद मुनीर खां ने भी बचपन में उस्ताद निसार अली से शिक्षा प्राप्त की थी। हाजी साहब के दूसरे बेटे का नाम अमान अली खां था। वे तबला कला में भी पारंगत थे। दुर्भाग्य से वह कुष्ठ रोग से पीड़ित थे। ऐसे में उनके परिवार वाले उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे।

उस्ताद हाजी साहब के तीसरे बेटे का नाम हुसैन अली खां था। हुसैन अली को तबला अपने पिता से विरासत में मिला था। इसके बाद उनकी लंबी तालीम उनके बड़े भाई उस्ताद निसार अली खां ने पूरी की। उस्ताद हुसैन अली ने फर्रुखाबाद घराने के विस्तार और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके शिष्यों में कई प्रसिद्ध उस्तादों के नाम दर्ज हैं जिनमें उस्ताद मुनीर खां का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उस्ताद

मुनीर खां अपने समय के मशहूर तबला नवाज और अनोखे उस्ताद माने जाते थे। उस्ताद हुसैन अली के बाद मुनीर खां ने भी दिल्ली घराने के उस्ताद बोली बख्श से शिक्षा प्राप्त की। उस्ताद अमीर हुसैन खां, उस्ताद गुलाम हुसैन खां, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद नासिर खान उनके प्रमुख शिष्य थे।

फर्रूखाबाद घराना का रेला: (झपताल)

धातिट	गिड़नग	धिनतिट	गिड़नग	धीऽ
X	2			
गिड़नग	धातिट	गिड़नग	गिड़नग	तिगनग
0	3			
तातिट	किड़नक	तिनतिट	किड़नक	धीऽ
X	2			
गिड़नग	धातिट	गिड़नग	गिड़नग	तिगनग
0	3			

फर्रुखाबाद घराना की विशेषताएं

- स्वतंत्र वादन की दृष्टि से यह घराना अत्यंत सफल एवं अद्भुत घराना है। इसमें तबले की सभी रचनाएं शामिल हैं।
- इस घर में कायदा, पेशकार, रैला और रैले के नये रूप रौ और रवीश बजाते हैं।
- इस घराने में चाला या चलन बजाया जाता है जो इस घराने की एक लोकप्रिय रचना है।
- स्वतंत्र वादन के लिए यह एक बहुत ही सफल और बेहतरीन घराना है, क्योंकि इसमें एकल वादन के लिए आवश्यक सभी सुविधाएँ मौजूद हैं।

बनारस घराना

पंडित राम सहाय मिश्र जी बनारस घराने के संस्थापक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने तबला का प्रारंभिक प्रशिक्षण अपने पिता और चाचा से प्राप्त किया। पंडित राम सहाय, मोदू खां के तबले से बहुत प्रभावित थे, उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा उन्हीं से प्राप्त की। पंडित राम सहाय जी के परिवार में उन्होंने अपने छोटे भाइयों जानकी सहाय, भैरो सहाय और अपने शिष्यों में बैजू महाराज, रामशरण और प्रताप महाराज आदि को अपनी विद्या सिखाई। जिससे इस परिवार की परंपरा का प्रचार व प्रसार हुआ। जानकी सहाय जी एक कुशल कलाकार थे, उनके वंशजों और शिष्यों में गोकुल जी, रघुनंदन, विश्वनाथ, यूसुफ खां, महादेव चैधरी, महावीर महाराज, वीरू मिश्र और रामनाथ पांडे प्रसिद्ध कलाकार हैं। भैरो सहाय की वंशावली और शिष्य परंपरा में बलदेव सहाय, भगवती सहाय, दुर्गा सहाय, शारदा सहाय, विश्वनाथ, केदारनाथ और जगन्नाथ सभी अपने-अपने क्षेत्र के शीर्ष कलाकार रहे हैं। भैरो सहाय जी के शिष्यों में भगवान दास, बाचा मिश्र, समता प्रसाद आदि शामिल हैं। पंडित राम सहाय जी के शिष्यों में पंडित बैजू महाराज फर्द के विशेषज्ञ माने जाते थे। उनके पुत्र शिवप्रसाद, पौत्र नन्नू महाराज और प्रपौत्र प्रकाश महाराज सभी बनारस के प्रतिनिधि कलाकार हैं।

पंडित राम सहाय के एक अन्य शिष्य परामशरण जी एक कुशल कलाकार थे। उनके पुत्र दरगाही जी, पौत्र विक्रमादित्य मिश्र उर्फ बिक्कू जी, गौहरी महाराज और प्रपौत्र गामा जी तथा उनके पुत्रों में रंगनाथ मिश्र, सुरेंद्र मोहन मिश्र, विजय शंकर मिश्र आदि शामिल हैं। बिक्कु जी के शिष्यों में उच्च श्रेणी के कलाकार शामिल हैं, जिनमें प्रमुख नाम मुन्नू जी मृदंगाचार्य, गामा जी, नंद किशोर मिश्र और रंगनाथ मिश्रा हैं। राम सहाय जी के तीसरे शिष्य यदुनंदन जी की शिष्यता एवं वंश परम्परा उपलब्ध नहीं है। उनके चैथे शिष्य भगत जी तबले के महान पंडित थे।

उनके शिष्यों में भैरों प्रसाद, अत्ता हुसैन खां, महादेव मिश्र आदि उल्लेखनीय हैं। अपने शिष्यों में पंडित अनोखे लाल का नाम विश्व प्रसिद्ध है। उनके शिष्यों में पंडित छोटे लाल मिश्र, पंडित रामजी मिश्र आदि प्रसिद्ध हैं। वर्तमान कलाकारों में गिरीश चंद्र श्रीवास्तव, प्रभुदत्त वाजपेयी, श्री राम सिंह और अनुप बनर्जी शामिल हैं।

बनारस घराने का कायदा

तिरकिट तकतिर किटतक धा	तिरकिट तकतिर किटतक धिन
X	2
तिरकिट तकतिर किटतक धेट	धिरधिर किटतक तातिर किटतक
0	3
तिरकिट तकतिर किटतक ता	तिरकिट तकतिर किटतक तिन
X	2
तिरकिट तकतिर किटतक धेट	तिरकिट तकतिर किटतक किटतक
0	3

बनारस घराना की विशेषताएं

- इस घराना में अनामिका उंगली को मोड़कर तबले पर प्रहार करने से ध्वनि उत्पन्न की जाती है।
- इस घराना में लव का प्रयोग सबसे ज्यादा किया जाता है और यही प्रयोग इस घराना को बाकी घरानों से अलग बनाता है।
- बनारस घराने में गत परन, मोहरा, मुखड़ा, रेला, लग्गी, बांट को कायदों से अधिक महत्व दिया जाता है।
- फर्द नाम की विशेष गतें इस घराने की मुख्य विशेषता हैं।
- यह घराना नृत्य से संबंधित है, इसलिए इसमें तोड़े, टुकड़े चक्रदार, स्तुति आदि विशेष रूप से बजाये जाते हैं।

पंजाब घराना

तबले का पंजाब घराना अन्य घरानों की तरह दिल्ली घराने से संबंधित नहीं है। इस घराने का विकास स्वतंत्र माना जाता है। कुछ विद्वान इस घराने को तबले का सबसे प्राचीन घराना मानते हैं। भवानी दास, उस्ताद सिद्धार खां के समकालीन पखावजी वादक माने जाते हैं। पंजाब घराने की परंपरा उनके शिष्यों के माध्यम से फैली और एक घराने के रूप में विकसित हुई। उस्ताद फकीर बख्श पखावजी वहां के कलाकारों में से एक थे, जिन्होंने तबला वाद्य के महत्व को समझते हुए, भवानी दास द्वारा विकसित नए तबला वाद्य दुक्कड़ को बजाना शुरू किया। इसके बाद फकीर बख्श के गुरु भाइयों, पुत्रों और शिष्यों ने उनके कार्य में हर प्रकार का सहयोग दिया। इसलिए पंजाब के सबसे बुजुर्ग तबला वादक फकीर बख्श खां को इस घराना का प्रतिस्थापन माना जाता है।

उस्ताद फकीर बख्श खां अपने समय के महान कलाकार थे। उन्होंने तबले को पंजाब में बहुत लोकप्रिय बनाया। उनकी परंपरा के अनुसार, उनके पुत्र कादिर बख्श खां इस राजवंश के सबसे महान कलाकार थे। उनके शिष्यों में लाल मुहम्मद खां, रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह, उस्ताद अलारखा खां, उस्ताद जाकिर हुसैन वर्तमान समय में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

पंजाब घराने का रेला (तीनताल)

धाऽतिर किटतक तिरकिट धाऽतिर

x

किटतक धाऽतिर किटतक तिरकिट

2

ताऽतिर किटतक तिरकिट ताऽतिर

0

किटतक धाऽतिर किटतक तिरकिट

3

पंजाब घराना की विशेषताएं

- इस घराने का वादन मजबूत और खुला है, जो पखावजा से काफी प्रभावित है, जिसमें चार अंगुलियों के उपयोग के साथ तबले पर थाप का भरपूर प्रयोग किया जाता हैं।
- इस घराने तबले को सीधी उंगलियों से बजाया जाता है।

निष्कर्ष

तबला वादन के विकास में विभिन्न घरानों की भूमिका स्वयंसिद्ध होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण भी है। आज हम तबला वादन की जिस समृद्ध परंपरा को प्रस्तुत कर रहे हैं वह प्रसिद्ध घरानों और उनसे जुड़े कलाकारों की कड़ी मेहनत, संघर्ष और अथक प्रयासों के कारण है। दिल्ली घराने ने जहां अपने घराने को मूल केंद्र बनाकर तबले की अन्य शाखाओं को जन्म दिया है, वहीं अन्य घरानों के संगीतकारों ने अपनी कला से न केवल संगीत में एक अनूठी पहचान बनाई है, बल्कि इसे साबित भी किया है।

संदर्भ

मिस्त्री, डा. आबान ए., (1984), पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें, स्वर साधना समिति, बम्बई।
मिश्र, पं. विजय शंकर, (2005), तबला पुराण, कनिष्क पब्लिषर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली।
राम, डा. सुदर्षन, (2000), तबले के घराने वादन शैलियां एवं बंदिशे, कनिष्क पब्लिषर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
चोबे,, डा. सुषील कुमार, (1977), संगीत में घरानों की चर्चा, उतर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
चोबे वंदना, (1982), गायन के विभिन्न घराने तथा उसकी विशेषताएं, संगीत, घराना अंक।